भूमिका

जो भाव हित के साथ हो वही साहित्य का शाब्दिक अर्थ है। साहित्य समाज के प्रति हमारे विचारों, भावों एवं अर्थों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। साहित्य जीवन की अनुभूतियों के प्रकाशन का एक सशक्त माध्यम है। एक रचनाकार अपने ईर्द-गिर्द जो कुछ देखता है, जो अनुभव करता उसे साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। हिन्दी साहित्य में मूर्धन्य रचनाकारों ने नारी के बारे में अपने किरदारों के माध्यम से समय-समय पर काफी कुछ कहा है। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक स्त्री की अवस्था में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि सम्प्रदायों, वर्गों, धर्मों एवं जातियों में बंटे समाज में स्त्री जाति कभी देह, कभी वस्तु कभी दासी के रूप में चिन्हित की गई ।

प्राचीनकाल से ही नारी अपने समस्त व्यक्तित्व एवं भूमिकाओं के साथ साहित्य में उपस्थित रही । ऋग्वेद काल में, स्त्री का आगमन शुभ माना जाता था परंतु उत्तरवैदिक काल में कन्या का जन्म भार स्वरूप समझा जाने लगा था। महाकाव्य काल में नारी, पुरुष की सम्पत्ति मानी जाने लगी थी और पुराण काल में इनका दायरा एवं स्थान और ज्यादा संकुचित, परिसीमित होता गया। इस काल में स्त्री पति एवं परिवार की सेवा करने में ही अपनी सपूर्ण ऊर्जा एवं संवेदनात्मक शक्ति खर्च कर देती थी। प्रारंभिक काल में स्त्री भोग्या मात्र थी, मध्यकाल आते-आते स्त्री का जीवन अनेक विसंगतियों से भर गया था। सूफ़ियों ने स्त्री को प्रतीक मानकर प्रेम साधना रूप में स्वीकार किया और कबीर, तुलसी, सूरदास आदि कवियों ने नारी को अलग-अलग ढंग से साहित्य में अभिव्यक्त किया । नवोत्थान काल में कई समाज सुधारकों ने नारी संवेदना एवं उसकी मुक्ति संबंधी, सामाजिक कुरीतियों के विरोध में अनेक स्त्री-संगठनों की स्थापना की ।

आधुनिक युग में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में स्त्री की स्वतंत्रता, उसकी मुक्ति एवं अस्मिता को अंधकार के मुँह में ढकलने वाली सामाजिक व्यवस्था एवं रूढ़िवादी परंपरा का पुरजोर खण्डन किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्थान (1882) में एक क्रान्तिकारी महिला (ताराबाई शिन्दे) की किताब (स्त्री-पुरुष तुलना' छपी और 1882 में ही (सीमंतनी उपदेश' पुस्तक में स्त्री की दयनीय दशा और संवेदनात्मक प्रताड़ना के अनेक रूपों को उजागर किया गया। पंडित रमाबाई, साबित्री बाई फूले आदि चेतनशील महिलाओं ने स्त्रियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना की।

19वीं सदी में ही भारतीय महिलाओं के जेहन से ऐसे प्रश्न खड़े होने लगे थे जिसका उत्तर पुरुष प्रधान समाज के पास नहीं था। भक्तिकाल में मीरा ने, तीस के दशक में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, बंग महिला (राजेन्द्रवाला घोष) आदि अन्य कई लेखिकाओं ने नारी की स्वतंत्र निर्णय शक्ति एवं अधिकार की बात उठाई। छठवें दशक में कई महिला साहित्यकारों के पदार्पण ने (स्त्री-विमर्श' को लेकर अपनी-अपनी संवेदनाएँ प्रस्तुत की| इसप्रकार वैदिक काल से अब तक नारी को प्रत्येक क्षेत्र में उसके अधिकारों से वंचित रखा गया। उसकी शारीरिक, सांवेदिक सभी शक्तियों का पुरुष वर्ग द्वारा शोषण किया गया। भारतीय समाज में नारी हमेशा से ही दीन-हीन एवं दोयम दर्जे की श्रेणी में रही है। औरत-मर्द दोनों मिलकर समाज का निर्माण करते हैं, किन्तु हमारी सोसायटी में स्त्री को कभी समानता अथवा पूर्ण मानवी का भी स्थान नही प्राप्त हुआ। कोई भी युग अथवा समय ऐसा नही रहा जिसमें वह केवल मनुष्य के रूप में पहचानी गई हो । यह सर्वमान्य तथ्य है कि स्त्री सदियों से भोग्या बन शोषण एवं भेदभाव सहते-सहते निशक्त हो गई है। भारतीय हिन्दी साहित्य में नारी हमेशा चिन्तन का विषय रही हैं। प्राचीन समय से अर्वाचीन समय तक के साहित्य में नारी के विषय पर चिंतन होता आया है।

स्वातंत्रोत्तर काल से ही हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श पर वाद-संवाद हो रहे हैं। स्त्री-विमर्श पर केवल पुरुष विचारकों ने ही नहीं बल्कि महिला लेखिकाओं ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज जब कभी भी संगोष्ठियों में साहित्य की चर्चा-परिचर्चा होती है तो विमर्श शब्द स्वत: बहस के केन्द्र में आ जाता है। शब्द प्रयोग की दृष्टि से विमर्श शब्द बहुत पुराना है किन्तु वर्तमान युग में यह शब्द स्त्री के साथ होने पर एक विशिष्ठ प्रकार का अर्थघटन करता है । स्त्री-विमर्श के द्वारा स्त्री के शोषण, उत्पीड़न, दमन एवं असंवेदनशीलता के तथ्य सामने आ रहे हैं । नारी किस प्रकार से अपनी निजता एवं स्वतंत्रता को स्थापित कर सकती है ? पितृसत्ता को चुनौती देकर शोषण से मुक्ति पा सकती है, इसके लिए विमर्श ही ऐसा लेखन है जिसके माध्यम से महिला कथाकार स्त्री के उत्पीड़न के साथ-साथ, उन प्रश्नों को भी उठा रही हैं जिनमें स्त्री की उपेक्षा हुई है।

आज सभी देशों में स्त्री को केन्द्र में रखकर सबसे ज्यादा लिखा जा रहा है। महिला के प्रति शताब्दियों से जो पुरुषवादी समझ बनी है, उस समझ को बदलने में अभी तक संपूर्ण सफलता नही मिली है। औरत-मर्द के बारे में जब भी बात होती है तब पूर्णपुरुष की बात मानव संदर्भ में होती है किन्तु स्त्री को पूर्ण मानव की संज्ञा मिलने के बजाय भोग्या ही कहा जाता रहा है। जबकि मानव कोटि में स्त्री-पुरुष दोनों आते हैं। व्यवहारिक एवं सैद्धान्तिक दोनों रूपों में पुरुष को ही श्रेष्ठ व्याख्यायित किया गया, और स्त्री, पुरुष के संदर्भ में ही परिभाषित की गई। अंतत: साहित्य से लेकर दर्शन तक में नारी को 'अन्य' के रूप में देखा गया । पहली दफा महिला कथाकारों के कथा साहित्य में ही इस सच्चाई का उद्घाटन हुआ कि पितृसत्तात्मक समाज के वर्चस्व का सबसे प्रचंड दबाव स्त्री संवेदना पर ही रहा है। और हमारे मानव मूल्य; मानव मूल्य न होकर पितृसत्तात्मक मूल्य हैं जो स्त्री की स्वतंत्रता के पक्ष में नहीं है।

नारी मुक्ति आन्दोलनों के द्वारा भी हमारे देश में वैचारिक परिवर्तन हुए। 'नारीवाद' भी एक ऐसा ही स्त्री मुक्ति आन्दोलन है। नारी-विमर्श परक चिन्तक स्त्री को स्त्री संदर्भ में रखकर व्याख्यायित करते हैं। इसका स्त्री की संवेदना से बहुत प्रगाढ़ संबंध है। औरत को शैक्षणिक रूप से पीछे और चहारदिवारी में कैद रखकर कोई भी देश विकास नहीं कर सकता है। इसलिए समाज में स्त्री को बराबरी का अधिकार मिलना चाहिए, उसे पुरुषों के समान आत्मनिर्णय की स्वतंत्रता, समता का अधिकार, अवसर एवं सम्मान मिलना चाहिए। आज स्त्री समाज में अपनी अस्मिता को स्थापित कर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करने के लिए संघर्षरत है, उसमें अपने हित में उचित निर्णय लेने की शक्ति संचरित एवं सम्मान के साथ जीवन जीने की इच्छा प्रबल हो उठी है।

मैने प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि, औरत को उसकी संवेदना की अभिव्यक्ति एवं अस्तित्व के अभिज्ञान ने विमर्श की प्रेरणा दी। पुरुष के एकाधिकार एवं औरत पर अंकुश रखने की प्रवृत्ति से नारी को बाहर निकालने में सबसे बड़ा योगदान नारी संवेदना परक लेखन का है। नारी संवेदना, आत्मगौरव, आत्म-चेतना, आत्मसम्मान अस्मिता की खोज एवं आत्मनिर्णय की स्वतंत्रता ये सभी स्त्री विमर्श एवं नारी मुक्ति आन्दोलन का ही देन है।

हिन्दी साहित्य के प्रति मेरी अभिरूचि शुरू से ही रही है। 'राममचरित मानस' का अध्ययन मैं बचपन से ही करता आया हूँ अतः साहित्य में रुचि एवं गति दोनों प्रगाढ़ होता गया। एम०ए० करने के पश्चात् जब मैने 'नेट' की परीक्षा उतीर्ण किया (दिसम्बर 2014 में) तब पी०एच०डी० नामांकन हेतु प्रपोजल तैयार करना था। उस समय 'स्त्री विमर्श' एवं महिला कथाकारों का संगोष्ठियों में बोलबाला था। मैने नारी विमर्श पर शोध करने का मन बनाया और ऊषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा, ममता कालिया, इत्यादि महिला कथाकारों के कथा साहित्य का अध्ययन किया किन्तु

नारी विमर्श की थीम मुझे भारतीय संदर्भ में पूरी तरह सारगर्भित नहीं जान पड़ी। अत: मैंने नारी संवेदना को केन्द्र में रखकर "नासिरा शर्मा के: कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम" शीर्षक पर प्रपोजल तैयार किया और इस शीर्षक पर ही अपनी शोध निर्देशिका प्रो० शन्नों पाण्डेय मैडम से विचार-विमर्श किया। उन्होंने कुछ सुझाव और सुधार के साथ मुझे इस शीर्षक पर शोध करने की अनुमति दे दीं। अतः स्त्री संवेदना पर गहन अध्ययन करने के लिए ही मैंने शोध कार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है-

प्रथम अध्याय- नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

में नासिरा शर्मा का जीवन परिचय एवं साहित्यिक अवदान पर विस्तार से चर्चा किया गया है। इसके अंतर्गत लेखिका का जन्म, शिक्षा, परिवार, पारिवारिक स्थिति, वैवाहिक जीवन और एक रचनाकार होने के नाते उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व अंकित किया गया है कारण की आम व्यक्ति का व्यक्तित्व एकनिष्ठ होता है किन्तु साहित्यकार का व्यक्तित्व सार्वजनिक होता है। पाठक अपने साहित्यकार के जीवन मूल्यों से गहरा प्रभावित होता है इसलिए साहित्यकार के व्यक्तित्व के अंतरंग एवं बहिरंग दोनो अवस्थाओं का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में देना तर्क संगत है। इसी अध्याय में लेखिका के कृतित्व पर विस्तार से विश्लेषण किया है। इसके अन्तर्गत नासिरा शर्मा के दस उपन्यासों एवं दस कहानी संग्रहों की सभी कहानियों का परिचयात्मक विवरण एवं उनकी विषयवस्तु संक्षेप में विश्लेषित है। साथ ही उनके सीरियल लेखन डायरी, रिर्पोताज आदि पर भी गहन चर्चा किया गया है।

द्वितीय अध्याय- स्त्री संवेदना की अवधारणा

प्रस्तुत अध्याय में मैंने संवेदना का आशय, संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ, संवेदना का क्षेत्र विस्तार, संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध, संवेदना और नारी मन को रूपायित किया है। संवेदना का अर्थघटन करते हुए विभिन्न भारतीय एवं पाश्वात्य विद्वानों के मत एवं परिभाषाओं के उदाहरण के रूप में अंकित किया है। संवेदना के कितने आयाम और क्या इसका क्षेत्र विस्तार होगा इस पर भी मैंने मनोविज्ञान एवं साहित्यिक पुस्तकों के माध्यम से तार्किक मूल्याकन किया है। इसी अध्याय में संवेदना और साहित्य एक दूसरे से कैसे अंतर्संबंधित हैं इसका जिक्र करते हुए हिन्दी साहित्य के कुछ प्रमुख रचनाकारों के रचनाओं से उदाहरण अंकित है| अंत में संवेदना और नारी मन की संक्षिप्त चर्चा किया है |

तृतीय अध्याय- स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकास: एक सर्वेक्षण

इस अध्याय में हिन्दी साहित्य की पूर्वपीठिका में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, बंग महिला की स्त्री संवेदना विषयक अवधारणा को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है | इसके पश्चात् कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडे, ममता कालिया आदि स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयामों का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में यह विश्लेषित हुआ है कि प्रमुख महिला कथाकारों नें किन-किन मुद्दों को अपने कथा साहित्य में नारी मुक्ति हेतु उठाया है | उदाहरण के लिए-पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री मुक्ति की पक्षधर नहीं है, लैंगिक विभेद नारी उत्थान के लिए सबसे सस्ती विचारधारा है, यौन सुचिता केवल महिलाओं के ऊपर आरोपित हथियार है जिससे जब चाहे तब पुरुष प्रधान समाज औरत पर वार कर सकता है। आत्मनिर्णय एवं वैचारिक स्वतन्त्रता की बंधी हुई बेड़ी भी नारी संवेदना को आहत करती है ऐसे अनेक मुद्दे

महिला कथाकारों के कथा साहित्य में देखने को मिलता है जिसका संवेदनात्मक अध्ययन इस अध्याय में किया गया है |

चतुर्थ अध्याय- नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय में नासिरा शर्मा के उन उपन्यासों का सम्यक विश्लेषण किया गया है जिनमें स्त्री संवेदना की विषयवस्तु एवं नारी मुक्ति का विचार उभर कर सामने आया है| लेखिका के तीन उपन्यास 'सात नदियां एक समुंदर' (बहिस्ते जहरा) 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी' में स्त्री संवेदना के विविध आयाम चित्रित हुए है अतः इन्ही तीनों उपन्यासों में नारी की संवेदना, उसकी मुक्ति में बाधक तत्वों का पहचान कर इस अध्याय का संवेदनात्मक मूल्यांकन किया है| 'सात नदियां एक समंदर' उपन्यास की सातों नायिकाओं के शैक्षिक, वैवाहिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं राष्ट्र प्रेम के लिए अपनी बलि चढ़ा देने की प्रबल संवेदना का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एवं अनुसंधान इस अध्याय में हुआ है|

'शाल्मली' उपन्यास की नायिका परंपरा के साथ नवाचार से भी भिज्ञ है, अतः विवाह के पूर्व ही वह ऐसे पति, परिवार की आकांक्षी थी जो उसके शिक्षा, आर्थिक स्वतन्त्रता, मान-सम्मान को कभी कम न समझे, उसे ऐसा परिवार मिला भी किन्तु पुरुष के अहंभाव की शिकार शाल्मली होती है और वे सभी अमानवीय प्रताड़नाओं से गुज़रते हुए अपनी कोख उजाड़ देती है| परंपरावादी होते हुए भी उसने आधुनिकता को धारण किया अपनी नौकरी कायम रखी, एक छत के नीचे होते हुए भी उसने पुरुष को नकार दिया किन्तु संबंध विच्छेद नहीं किया|

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास मुस्लिम परिवार के पुरुष एवं महिला के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, नौकरी-पेशा आदि मुद्दों से जुड़ा उपन्यास है, इसमें पुरुष और महिला की विरोधाभाषी संवेदना एवं शिकन परिलक्षित हुआ है किन्तु कथा नायिका 'महरुख' त्याग और बलिदान के साथ शसक्त व्यक्तित्व की धनी नायिका है

वह पुरुष को मर्यादा रूप में चाहती है जिसपर उसका एकनिष्ट अधिकार एवं प्रेम हो किन्तु उसका सौहर आर्थिक, सामाजिक, पद प्रतिष्ठा से योग्य किन्तु चापलूस, दुष्चरित्र, है महरुख से सच्चा प्रेम भी करता है और सुधर भी जाता है पर कथा नायिका अकेले समाज सेवा में जीवन व्यतीत करना स्वीकार करती है और विवाह से इंकार कर देती है। प्रस्तुत अध्याय में स्त्री की अस्मिता की खोज, उसके स्वाभिमान की रक्षा, शोषण के विरुद्ध आवाज, आत्मनिर्णय की संकल्पना आदि संवेदनात्मक पहलुओं का तार्किक विश्लेषण किया गया है |

पंचम अध्याय- नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना

इस अध्याय में स्त्री संवेदना की प्रस्थापनाएँ- साहित्य में जो स्त्री संवेदना है उसके अंतर्गत नासिरा शर्मा के कहानियों का संवेदनात्मक अध्ययन किया गया है। आलोच्य लेखिका के कहानी संग्रहों एवं संवेदनात्मक प्रमुख कहानियों में जिस-जिस स्थान पर जिस जिस कहानी में स्त्री की मुक्ति उसकी स्वतन्त्रता, परंपरा का दबाव एवं परम्पराओं से संघर्षरत स्त्री चरित्र दिखाई पड़ा है उसका संवेदनात्मक अध्ययन हुआ है। नासिरा शर्मा की कहानियों की विषयवस्तु नारीवादी आंदोलन की सीमाओं से बाहर रहकर वृहत्तर सामाजिक, राजनीतिक संवेदना पर विचार करती हैं। इन्होंने विभिन्न देशों और समाजों की स्त्रियों एवं उनकी समस्याओं को निकट से देखने समझने की कोशिश की हैं और इसी कोशिश की यथार्थ परक साहित्यिक धरातल लेखिका का कहानी संग्रह एवं कहानियाँ हैं| प्रस्तुत अध्याय में स्त्री संवेदना के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, यौनिक, स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों की पहचान करके नारी संवेदना के विविध आयामों को रूपायित किया गया है | प्रस्तुत अध्याय में मैंने नासिरा शर्मा के कहानियों का आधार लेकर अन्य लेखिकाओं के कथा साहित्य अथवा स्त्री विमर्श परक पुस्तकों से

उदाहरण प्रस्तुत किया है। संवेदना की वस्तुनिष्ठता एवं शोध की मौलिकता हेतु मैंने सबसे ज्यादा लेखिका की कहानियों से ही संदर्भ प्रस्तुत करने की कोशिश किया है |